RNI No.-MAHBIL/2016/66409
Postal Registration No.-PCE / 089 / 2016-2018
License to Post without
prepayment No.-WPP-255/31.12.2018

BJS
Bharatiya Jain Sanghatana

भारतीय जैन संघटना

समाचार

श्री शांतीलाल मुथ्था
संस्थापक

Editor - Prafulla Parakh

वर्ष 1 अंक 7 | मूल्य - रू.1/- | जुलाई 2016 | पृष्ठ - 8

राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से.....2

युवती सक्षमीकरण अभियान.....4

भारतीय जैन संघटना का
मानवीय उपक्रम.....6

मंथन: भावात्मक
सशक्तिकरण
का बढ़ता महत्व.....3

प्रतिभाएँ-
जो हमारी प्रेरणास्त्रोत हैं.....5

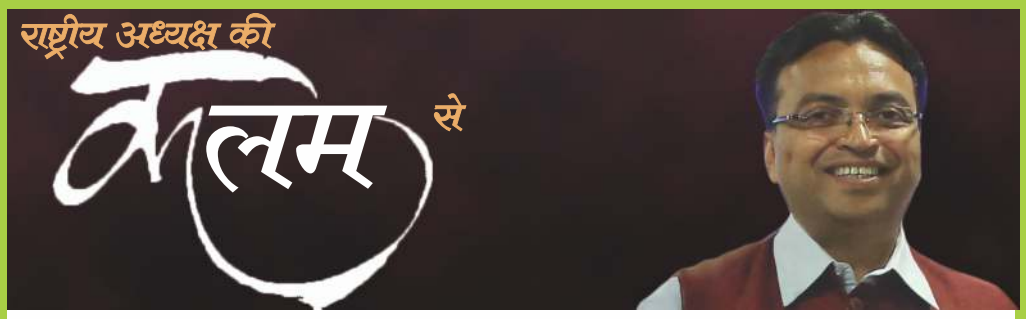

राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से

प्रिय आत्मजन,

मानसून की प्रतिक्षा समाप्ति एवं सर्वत्र व्याप्त खुशनुमा माहौल हेतु आप सभी को अनेक शुभकामनाएँ. इस समाचार पत्र के प्रत्येक अंक में प्राचीन काल से ही हममें पेठी हुई वैचारिक सामाजिक जड़ताओं को तोड़ने के प्रयास में चुनौती स्वरुप नए विचारों एवं विषयों की प्रस्तुति ही हमारा उद्देश्य है. इस अंक का विषय भावात्मक सशक्तिकरण है जिसके केंद्र बिंदू में किशोरियों के भावात्मक सशक्तिकरण की अनिवार्यता पर लक्ष्य किया गया है. आदर्श समाज की रचना में सशक्तिकरण, सभ्यताओं एवं संस्कृतियों के रक्षण हेतु कारगर शस्त्र है.

यह सनातन सत्य है कि महिलाओं के अभूतपूर्व एवं अमूल्य अंशदान के बिना सभ्यताओं एवं संस्कृतियों का विकास संभव ही नहीं है. किन्तु महिलाओं की सामाजिक स्थितियों के मद्देनज़र, वैश्विक दृष्टिकोणों में भिन्नताएँ सर्वत्र व्याप्त हैं. समस्त विश्व में महिलाओं को मताधिकार सर्वप्रथम न्यूज़ीलेंड में वर्ष 1893 में प्रदान किया गया. नवजागरण काल के प्रारम्भ व औद्योगिक क्रांति के प्रादुर्भाव के बाद भी इंग्लैंड में महिलाओं को मताधिकार वर्षों पश्चात दिया गया जो महिलाओं के प्रति दुर्भावनाओं या असमानताओं की भावनाओं का ध्योतक है. इसके ठीक विपरीत, स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ, भारत में पुरुषों एवं महिलाओं को समान अधिकारों का दिया जाना, निश्चित ही एक महान मानवीय एवं सामाजिक घटना है, जिसका विश्व इतिहास में उल्लेख स्वर्णिम अक्षरों में होना चाहिए.

भारतीय जैन संघटना द्वारा किये गए अध्ययनों एवं अनुसंधानों के परिणामों के आधार पर हमारा निश्चित अभिप्राय है कि किशोरियों का भावात्मक सशक्तिकरण निर्विवादितरूप से अनिवार्य है, अतएव वर्ष 2008 से किशोरियों एवं युवती हेतु महिला सशक्तिकरण अभियान प्रारम्भ किया गया क्योंकि किशोरावस्था में आदतों एवं जीवनशैली में घटित होते परिवर्तनों एवं रूपान्तरणों से भ्रमित होना सामान्य बाबत है. किशोरावस्था में बेटियों को अनेक मानसिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जिसे वे परिवारजन के साथ चर्चा करने में संकोच का अनुभव करती हैं. आज आवश्यकता इस बात की है कि हम उनके साथ मित्रवत व्यवहार करें, उन्हें सामाजिक जीवन मूल्यों से परिचित करवाएं ताकि वे आत्म-सम्मान की भावना, उत्तरदायित्वपूर्ण स्वतन्त्रता एवं पारिवारिक संबंधों की तर्कसंगतता को समझ सकें.

भारतीय जैन संघटना किशोरियों के सक्षमीकरण हेतु पूरे देशभर में एक अभियान चला रहा है. "युवतियों का सक्षमीकरण – २१वीं सदी की चुनौतियां का सामना करने हेतु" कार्यशालाओं का आयोजन, समाज एवं शैक्षणिक संस्थाओं में कर किशोरियों के जीवन में सुरक्षा एवं आत्मविश्वास में वृद्धि का कार्य कर रहा है.

आज के किशोर कल के उत्तरदायी नागरिक हैं किन्तु कुछ किशोर आधुनिक जीवन शैली एवं भ्रमित आकर्षणों में अज्ञानतावश स्वयं का व समाज का अहित करते हैं. हमें प्रसन्नता है कि इस अंक में एक ऐसी अनुकरणीय एवं विलक्षण युवा प्रतिभा 22 वर्षीय सुश्री टीना डाबी से आपका परिचय करवा रहे हैं, जिसने इस वर्ष संघ लोक सेवा आयोग की प्रशासनिक सेवाओं हेतु आयोजित स्पर्धात्मक परीक्षा में देश में प्रथम स्थान प्राप्त किया है.

बीड जिले के माजलगाँव तहसील की श्रीमती अनिता देवकुळे ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री को अपनी तीन बेटियों के जन्म की वजह से झेल रही मानसिक एवं शारीरिक यातना से मुक्ति हेतु, पत्र लिखकर तीनों बेटियों सहित आत्महत्या करने की इजाजत मांगी थी, जिसका समाचार टेलीविजन पर देखकर, भारतीय जैन संघटना के संस्थापक श्री शांतीलालजी मुथ्था ने न केवल श्रीमती अनिता देवकुळे को नौकरी देकर मदद करने की पेशकश की बल्कि उसकी तीनों बेटियों के शैक्षणिक पुनर्वसन की जबावदारी भी ली. मुख्यमंत्री श्री देवेन्द्रजी फड़नवीस ने बीजेएस प्रकल्प में इन तीनों बेटियों को अपने हस्ते शैक्षणिक प्रवेश दिया.

आपको विदित ही है कि हमारे इस प्रकाशन के प्रत्येक अंक का पृष्ठ क्रमांक 7 अल्पसंख्यक समाचारों एवं सूचनाओं हेतु आरक्षित है किन्तु इस अंक में वाघोली, पुणे स्थित शैक्षणिक पुनर्वसन केंद्र में मराठवाड़ा के आत्महत्याग्रस्त किसान परिवारों के भारतीय जैन संघटना द्वारा दत्तक लिए गए 916 बच्चों के स्वागत समारोह में उपस्थित महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री देवेन्द्र फड़नवीस द्वारा दिए गए वक्तव्य को प्रकाशित कर रहे हैं जो समाज को सन्देश देने हेतु महत्वपूर्ण है.
आपको सूचित करना चाहता हूँ कि सूखे से प्रभावित होकर अपनी जीवन की इहलीला समाप्त कर चुके महाराष्ट्र राज्य के किसान परिवारों एवं आदिवासी परिवारों की मदद हेतु आदरणीय श्री शान्तीलालजी मुथ्था ने एक अभूतपूर्व कदम उठाते हुए 1000 बच्चों के शैक्षणिक पुनर्वसन की महती जिम्मेदारी लेकर इन बच्चो के भविष्य को संवारने का भागीरथ कार्य स्वीकार किया.

प्रफुल्ल पारख
राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय जैन संघटना

5-6 Nov. 2016

विनम्र निवेदन

भारतीय जैन संघटना का

राष्ट्रीय अधिवेशन 2016

दि. 5 व 6 नवंबर 2016 को **चैन्नई** में आयोजित होगा.

कृपया यह तिथि आरक्षित रखे.

- National & International Speakers
- Keynote Addresses by Subject Experts
- Opportunity for Nationwide Networking

संपादक
प्रफुल्ल पारख, पुणे

कार्यकारी संपादक
निरंजन कुमार जुवाँ जैन, अहमदाबाद

सदस्य
कैलाशमल दुगड़, चैन्नई सुरेश कोठारी, अहमदाबाद सुदर्शन जैन, बड़नेरा, वीरेंद्र जैन, इंदौर
महेश कोठारी, गोंदिया, संजय सिंघी, रायपुर, राजेंद्र लुंकड़, इरोड

मंथन

भावात्मक सशक्तिकरण का बढ़ता महत्व

भाव-प्रधान्यता मानव मनोवृत्ति का अनन्य हिस्सा है जो हमारें जीवन को सम्पूर्णता प्रदान करता है. भावात्मक अभिव्यक्तियां प्रेम, सुख, दुख, क्रोध, घृणा जैसे विविध माध्यमों से प्रकट होती हैं, जिसका अनुभव हम सभी दैनिक जीवन में करते हैं. सैद्धांतिक रूप से भाव एक वैचारिक स्थिति है जो स्वभावतः उत्पन्न होती है, जो न तो सुविचारित ही होती हैं ओर न ही सुनियोजित. भावात्मकता, सही अर्थो में मानव का श्रृंगार है, जो उसे नव रूप प्रदान करती है. किसी भी अर्थ में भाव, मानव के बलशाली या दुर्बल होने का प्रतीक नहीं है. भावों का खुलकर प्रदर्शन मानव की निखालस व निर्मल छवि का परिचायक है. पुरुष हो या महिलाएं प्रकृति-प्रदत्त भाव स्थितियाँ, लिंग भेद से अबाधित दोनों में ही समान रूप से पायी जाती हैं. किन्तु समस्या तब उत्पन्न होती है जब समाज लिंग भेद के आधार पर भाव प्रदर्शन में सीमाओं का निर्धारण करने लगता है.

किशोरावस्था में किशोर और किशोरियां दोनों ही उनमें विकसित हो रहे पुख्त वय के रूपांतरणों को महसूस करने लगते हैं. वस्तुतः यह स्थिति मानव विकास के शारीरिक एवं वैचारिक संक्रमणकाल का दौर है, जो यौवनारंभ एवं वयस्कता का संधिस्थल है. किशोरावस्था में हारमोन परिवर्तन व भावनात्मक खलबलियों के कारण किशोर ओर किशोरियाँ सामान्य जीवन जीने में अनेक दुभरताओं का सामना करते हैं. प्रायः हम पाते हैं कि विकसित हो रहे इन परिवर्तनों के फलस्वरूप उनमें से कुछ अंतर्मुखी होकर संकोची व कुछ बहिर्मुखी होकर आक्रामक हो जाते हैं. ये दोनों ही स्थितियां भ्रामक अवस्था की परिचायक हैं. उनकी कश्मकश, समस्याओं या वैचारिक स्थितियाँ को समझना माता-पिता या शिक्षकों हेतु अत्यंत ही कठिन होता है. ये वो अवस्था है जहाँ समयानुकूल मार्गदर्शन, आत्मीयता व देखभाल के अभाव में वे गुमराह हो सकते हैं.

युग परिवर्तन के इस दौर में सर्वाधिक दुष्प्रभाव परिवार नाम की संस्था पर पड़ा है. एक ओर परिवार का कार्यक्षेत्र, उद्देश्य एवं उसकी परिभाषा भी बदली है वहीं दूसरी ओर परिवार के सदस्यों के मध्य सामंजस्यता का अभाव एवं संवादहीनता की स्थितियों का निर्माण हो रहा है. वैयक्तिक विचारधाराओं से सिंचित आज की नयी पीढ़ी उन व्याधियों से ग्रसित है जो भावनात्मक विकारों को जन्म देती हैं, जिससे परिवार एवं समाज में असंतुलन विकसित हो रहा है. नयी पीढ़ी की जीवनशैली, उस पर पाश्चात्य संस्कृति का गहरा प्रभाव, नव-तकनीक का आगमन आदि एसे अनेक विकट विषय हैं जिससे परिवार के सदस्यों के मध्य गहरी वैचारिक खाइयाँ निर्मित हुई हैं जो किशोर ओर किशोरियों हेतु मानसिक दबाव का कारण हैं. यही मानसिक दबाव नयी पीढ़ियों में वर्ष प्रतिवर्ष आत्महत्याओं की दर में वृद्धि का मूलभूत कारण है, जिसके आने वाले वर्षों में अधिक गंभीर रूप धारण करने की संभावनाएं हैं.

किशोरियों के मामले में विशेषकर सामाजिक प्रतिबंधों के चलते समस्या मात्रागत रूप से गंभीर बन जाती है जो उनमें भावात्मक कुंठाओं को जन्म देती हैं. सामान्यतः यह पाया गया है कि किशोरावस्था में अधिकांश किशोरियाँ भावात्मक नकारात्मकताओं से ग्रसित रहती हैं. भारत में ही नहीं दुनिया का कोई भी देश विकसित हो या अर्धविकसित, महिलाओं की समानताओं का मुद्दा महत्वपूर्ण बनता जा रहा है व समाज में व्याप्त असमानताओं के विरुद्ध जंग छिड़ चुकी है. संयुक्त राष्ट्र संघ की महिलाओं द्वारा अपनाया गया "प्लेनेट 50-50" कार्यक्रम, समस्त विश्व की महिलाओं हेतु वर्ष 2030 तक समानुभूतिगत सामाजिक व अन्य स्थितियों की बहाली का सन्देश दे रहा है. लिंग के आधार पर महिलाओं के साथ भेदभाव समाप्त करने का स्वप्न, मानवीय आधारों के मद्देनज़र महत्वपूर्ण व आवश्यक कार्यसूची में सम्मिलित है व अब किशोरियों को बाल्यकाल से ही उन्हें प्रहारात्मक भावात्मकता के प्रतिकार हेतु सशक्त करने की आवाश्यकता है. यह सशक्तिकरण बहु-आयामी होना चाहिए जिसमें भावात्मक सुदृढ़ता के साथ - साथ आर्थिक व सामजिक मुद्दों का भी समावेश होना चाहिए, क्योंकि अध्ययनों से ज्ञात होता है कि पुरुष एवं महिलाऐं दोनों ही भावात्मक घर्षणों से गुजरते हैं किन्तु महिलाओं में प्रतिकार क्षमताएं कम होने के कारण भावात्मक दुर्घटनाओं की वे प्रायः शिकार हो जाती हैं. अतः यह महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है कि किशोरियों को बाल्यकाल से ही भावात्मकरूप से सशक्त कर यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि उनका विकास, समझ एवं अन्वेषण संभव हो सके. भावात्मक स्थितियों के प्रति समझ एवं भावनाओं पर नियंत्रण व स्वयं के विचारों की स्पष्ट व योग्य तरीके से अभिव्यक्ति हेतु शिक्षा अनिवार्य है.

परिस्थितिजन्य कारणों एवं अज्ञानतावश, आज की यह नयी पीढ़ी मानव के भावात्मक पहलुओं के महत्व से अनभिज्ञ है. यही संभवित कारण है कि मानव संवेदनहीन होता चला जा रहा है. कहा जा रहा है कि मनुष्यों का स्थान यन्त्र मानव ले रहे हैं तथा समाज रोबोटिक सोसायटी का स्वरुप धारण कर रहा है. इन परिस्थितियों में वैश्विक स्तर पर मानवीय धरोहरों की सुरक्षा हेतु गंभीर प्रयासों की आवश्यकता है, जिसमें महिलाओं की भावात्मक स्थितियों के सशक्तिकरण को प्राथमिकता मिलनी चाहिए.

युवती सक्षमीकरण अभियान : प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में समाहित विषयों पर दृष्टिपात

युवती सक्षमीकरण (Empowerment of Girls) किशोरियों/युवतियों हेतु विशेष रूप से निर्मित कार्यक्रम है जो भावात्मक स्थितियों के मद्देनजर उनके अति संवेदनशील मुद्दों पर व्यावहारिक सलाह एवं समझ प्रदान करता है. 'सक्षमता एवं प्रसन्नता' वृद्धि की भावना को प्रोत्साहित करता यह 3 दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रमाण-पत्र कार्यक्रम, युवतियों को सामाजिक चुनौतियों का सामना करने हेतु भावात्मक रूप से सक्षम करता है. माहौल, मित्र-वर्तुल एवं पारिवारक मूल्यों संबंधी ज्ञान व जानकारी से उनमें सकारात्मक भावात्मक विकास ही इस अभियान का उद्देश्य है.

प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियाँ

14 से 21 वर्ष की आयु की सभी युवतियाँ, जो बचपन से युवास्था में प्रवेश कर रही हैं या कर चुकी हैं, युवती सक्षमीकरण (Empowerment of Girls) उन्हें स्वयं, परिवार, मित्रों, समाज, सम्बन्धों के महत्व व नव-तकनीकी के योग्य प्रयोग आदि मुद्दों को समझने व आत्मसात करने में सहायक है :

वर्ष 2008 से मई, 2016 तक कुल 627 कार्यशालों के आयोजन से 25,000 युवतियों को भारतीय जैन संघटना द्वारा सक्षम किया जा चुका है. युवती सक्षमीकरण अभियान निम्न राज्यों मे चलाया जा रहा है :

1. आंध्रप्रदेश	5. गुजरात	9. महाराष्ट्र	13. राजस्थान
2. आसाम	6. हरयाणा	10. मध्य प्रदेश	14. तामिलनाडु
3. छत्तीसगढ़	7. जम्मू एवं कश्मीर	11. नागालेंड	15. उत्तर प्रदेश
4. दिल्ली	8. कर्नाटक	12. पंजाब	16. पश्चिमी बंगाल

हमारे द्वारा प्रशिक्षित प्रशिक्षक उपरोक्त सभी राज्यों मे उपलब्ध हैं. हमारे कार्यकर्ताओं के नेट-वर्क व विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं के माध्यम से कार्यशालाओं का आयोजन अविरतरूप से किया जा रहा है.

प्रतिभाएँ - जो हमारी प्रेरणा के स्रोत हैं

इनसे मिलिये

राजस्थान रत्न

श्री कैलाशमल दुगड़, चैन्नाई

चैन्नई निवासी श्री कैलाशमल दुगड भारतीय जैन संघटना के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं. दूरदृष्ट, विरल व्यक्तित्व, मृदुभाषि, मानवता के पक्षधर, सामाजिक नेतृत्वकार जैसी अनेक प्रतिभाओं के धनी श्री दुगड जैन समाज के ही नहीं देश के गौरव समाज हैं . ५५ वर्षो से अधिक की समाज सेवा यात्रा में आपने अनेक सीमाचिन्ह स्थापित कर समाज व राष्ट्र निर्माण में स्वयं की अविरत उपस्थिति दर्ज करवाई है. 20 वर्ष पूर्व आदरणीय श्रीशंतिलालजी मुथा की सामाजिक विचारधाराओ से प्रभावित होकर उनसे जुड़े ही नहीं अपितु आप भारतीय जैन संघटना के पर्याय बन चुके है. आप वर्ष 2010 से भारतीय जैन संघटना की राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य हैं. आपका जन्म 1943 मे जोधपुर मे हुआ. आपने बी.कॉम. कर मद्रास लॉ से वर्ष 1964 मे एल. एल. बी. की डिग्री प्राप्त की. समाजसेवा आपकी रक्तवहिनियों मे बाल्यकाल से ही प्रवाहित होता रहा है. आप विद्यार्थी काल से ही प्रवाहित होता रहा है. आप विद्यार्थीकाल से ही सामजिक कार्यो मे प्रवत्त रहे. चेन्नई मे राजस्थान जैन समाज को संघठीत करने के उद्देश से आपने वर्ष 1963 मे राजस्थानी यूथ अस्सोसिएशन स्थापना की व बुक बैंक प्रोजेक्ट प्रारंभ किया जिसमे आज तक 80000 से अधिक विद्यार्थी लाभान्वित हो चुके हैं. चेन्नई मे प्रथम 'जैन भवन' के निर्माण मे आपकी मुख्य भूमिका रही.

शिक्षा एवं शिक्षा विकास हेतु आप प्रशंसनीय कार्य कर रहे है. एम. कॉम. कॉलेज चेन्नईके 5 वर्षो तक सहयोगी सचिव रहे. सुराना जैन विद्यालय, चेन्नई के 14 वर्षो तक संस्थापक सचिव व वर्तमान मे उपाध्यक्ष पद पर सेवाए प्रदान कर रहे है. आप राजस्थानी एजुकेशन फाउंडेशन के अध्यक्ष है. जो शीघ्र ही 'महावीर राजस्थानी इंटरनेशनल स्कूल' प्रारम्भ करने जा रहे है. आप प्रकृति से धार्मिक है व अनेक धार्मिक संस्थानों से जुड़े हैं. आप "Lotus Blind welfare Trust Of India " की "Advisory Committee " के Chairman हैं. वर्ष 1975 मे आपकी 'भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव वर्ष समारोह समिति ' के सचिव पद पर तमिलनाडु राज्य सरकार द्वारा नियुक्ति की गयी थी. आप करुना इंटरनेशनल के राष्ट्रीय अध्यक्ष, मारवाड़ी फाउंडेशन, चेन्नई अध्यक्ष व अहिंसा रिसर्च फाउंडेशन के मेनेजिंग डायरेक्टर है. आप सम्यक द्यानप्रचारक मंडल, जयपुर के अध्यक्ष है. ऑटोमोबाइल हायर पर्चेसका आपका पारिवारिक व्यवसाय है. आप डेक्कन फाइनेंस लिमिटेड के मेनागिंग डायरेक्टर है. आप सौंदर्य प्रसाधनों का उत्पादन व निर्यात करते है. आपको राजस्थान गौरव सम्मान के अतिरिक्त वर्ष 2004 मे श्रीमती प्रतिभा पाटिल के करकमलों से राजस्थान रत्न सन्मान प्राप्त हुआ.

हमें इन पर गर्व है :

श्री जी. सी. जैन, रायपुर

श्री घेवरचंद जैन का जन्म 1933 में गाँव हरसूद जिला खंडवा (मध्यप्रदेश) में स्व.श्री सरदारमल एवं चम्पादेवी जैन के परिवार में हुआ. अद्वितीय शैक्षणिक क्षमताओं के धनी श्री जैन ने बी. काम. जबलपुर तथा सी. ए. कोटा एवं जोधपुर से किया. आपने विषारद (हिंदी) की डिग्री प्राप्त की एवं साहित्य रत्न प्रथम भाग तक शिक्षा ग्रहण की. 50 के दशक में सी. ए. बनना निश्चित ही आपकी असाधारण क्षमताओं का परिचायक है.

कर आयोजन संबंधी विचारधारा के आप प्रणेता हैं व आपने वर्ष 1958 में छत्तीसगढ़ क्षेत्र में इसे अमलीजामा पहनाया. सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ में आपकी गणना अति सम्मानीय व्यक्तित्व के रूप में होती है. श्री जैन 1995 में भारतीय जैन संघटना से जुड़े. आप प्रथम व्यक्ति हैं जो भा.जे.सं. को महाराष्ट्र राज्य से बाहर ले गए व छत्तीसगढ़ में स्थापित किया. आप छत्तीसगढ़ भारतीय जैन संघटना के प्रथम राजाध्यक्ष नियुक्त हुए. आपके 8 वर्षों के अध्यक्षीय कार्यकाल में भारतीय जैन संघटना को राज्य के प्रत्येक जैन परिवार तक ले जाने में आपने क्षमताओं के अनुरूप परिणामलक्षी श्रम किया. आप भारतीय जैन संघटना की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद पर रहे व आपने अनेक वर्षों तक संस्था के ट्रस्टी पद को भी सुशोभित किया. भारतीय जैन संघटना के मासिक समाचार पत्र प्रकाशन का शुभारंभ भी आपने किया.

आपने छत्तीसगढ़ जैन समाज के विद्यार्थियों को सी.ए. बनने हेतु प्रोत्साहित कर उन्हें योग्य मार्गदर्शन प्रदान किया व सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ में स्वयं स्थापित कार्यालयों में उन्हें आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान कर उन कार्यालयों को उन्हें ही सुपुर्द कर दिया. ऐसा भागीरथ कार्य वो ही व्यक्ति कर सकता है जिसके पास दूर दृष्टी के साथ युवाओं के प्रति वैचारिक संवेदनशीलता हो.

आपने अनेक सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक एवं धार्मिक संस्थाओं में सेवाएँ प्रदान की. ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कांफ्रेंस, शिक्षा दीप ट्रस्ट–रायपुर, मॉडर्न मेडिकल इंस्टिट्यूट-रायपुर, रायपुर इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलोजी, जैन एजुकेशन सोसायटी-रायपुर, विश्व हिन्दू परिषद्–रायपुर, इन्कमटैक्स बार एसोसिएशन-रायपुर, रीजनल डाइरेक्ट टैक्स एड्वाईसरी कमेटी ऑफ मध्यप्रदेश, छतीसगढ़ चार्टर्ड एकाउंटेंट एसोसिएशन-रायपुर, जैन पब्लिक स्कूल-रायपुर, जैन एजुकेशन सोसायटी-रायपुर के अतिरिक्त अनेक संस्थाओं में आप वरिष्ठ पदों पर रहकर समाज व देश निर्माण की प्रक्रिया में अविरत रूप से कार्यरत रहे हैं. आपको छत्तीसगढ़ जैन समाज द्वारा "जैन रत्न" से विभूषित किया गया. भा.जे.सं. ने आपको "लाईफ टाईम अह्चिव्मेंट अवार्ड" से नवाज़ा.

युवा प्रतिभा : टीना डाबी, हरयाणा

2016 UPSC Topper

देश कोई भी हो, उसकी प्रगति, कानून एवं सुव्यवस्था तथा सुशासन जीवादोरी समान प्रशासनतंत्र पर निर्भर करता है. भारत जैसे प्रजातंत्रीय गणतंत्र में कुशल एवं सुदृढ प्रशासनतंत्र के बिना सरकार का संचालन संभव ही नहीं है. देश का संघ लोक सेवा आयोग स्पर्धात्मक परीक्षाओं का आयोजन व पारदर्शक चयन पद्धति से प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में अत्यंत प्रतिभावान प्रशासनिक कर्मियों का चयन करता है. हो सकता है कि कुछ प्रत्याशी प्रशासनिक पदों की सत्ता व पैसे का प्रलोभन तो कुछ माता-पिता के स्वप्नों को पूर्ण करने के उद्देश्य से इन परीक्षाओं में भाग्य आजमाते हों, किन्तु कुछ बिरले व्यवस्थाओं व समाज को बदलने के स्वप्न संजोकर युवावस्था से ही भारतीय प्रशासनिक सेवाओं में जुड़ने हेतु तैयारियां करते हैं.

सुश्री टीना डाबी वह प्रतिभा है जिसने स्वयं के स्वप्न को साकार करने हेतु कठोर परिश्रम व अथक लगन के बल पर इस वर्ष संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा में सम्पूर्ण देश में प्रथम स्थान प्राप्त किया. एक साक्षात्कार में टीना ने इस सफलता का श्रेय उसके माता-पिता को दिया जिन्होंने उसे 12वीं कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर भी स्नातक कला प्रवाह (Arts) में अध्ययन करने हेतु प्रेरित किया ताकि वह IAS की तैयारी कर सके. मात्र 17 वर्ष की आयु में दिल्ली की प्रख्यात लेडी श्रीराम कोलेज की इस विद्यार्थिनी ने IAS की तन-तोड़ तैयारियां, सफलता पाने के विश्वास के साथ प्रारम्भ की. दलित पृष्ठभूमि की टीना डाबी ने प्रमाणित किया कि माता-पिता की प्रेरणा से ही सफलता के उच्च शिखर पर पहुंचा जा सकता है. यह अनुकरणीय है कि टीना ने अन्य मेघावी युवाओं की तरह डॉक्टर या इंजीनीयर बनने के स्थान पर कठिन चुनौती को स्वीकार किया. टीना आज देश के सभी युवाओं हेतु प्रेरणा स्वरुप है जिसने किशोरावस्था से ही सम्पूर्ण उर्जा को प्रशासनिक अधिकारी बनने हेतु लगा दिया. टीना हरयाणा केडर में रहकर महिला सशक्तिकरण हेतु रचनात्मक भूमिका का निर्वहन करना चाहती है.

भारतीय जैन संघटना का मानवीय उपक्रम:

आत्महत्याग्रस्त किसानोंके एवं आदिवासी क्षेत्र के 1000 विद्यार्थियों का 5 वीं से 12 वीं तक शैक्षणिक पुनर्वसन

"महाराष्ट्र के अंचलों से आये 1000 बच्चों को स्कूल के प्रथम दिवस पर मैं हार्दिक शुभकामनायें देता हूँ. इन बच्चों का जीवन स्तर ऊँचाइयों को प्राप्त हो, ईश्वर से मैं ऐसी प्रार्थना करता हूँ. देश और समाज में परिवर्तन के प्रयास सरकार की ओर से होते ही हैं, लेकिन जो बड़ा कार्य श्री शान्तीलालजी ने किया, इस प्रकार के कार्यों से ही सरकार को भी सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन में सहायता मिलती हैं. समाज में बदलाव शासन से नहीं सामाजिक प्रयासों से ही संभव है. समाज में व्याप्त समस्याओं के प्रति संवेदना और उसके प्रति समाधान का भाव रखने से ही परिवर्तन संभव है. "यह बात महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री माननीय श्री देवेन्द्रजी फड़नवीस ने महाराष्ट्र राज्य के आत्महत्याग्रस्त किसानों के लडके-लडकियाँ व आदिवासी क्षेत्र के लडके ऐसे 1000 बच्चों के स्वागत हेतु आयोजित समारोह के दौरान भारतीय जैन संघटना के शैक्षणिक पुनर्वसन प्रकल्प वाघोली, पुणे में 15.06.2016 कही.

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेन्द्रजी फड़नवीस ने आगे कहा कि "श्री शान्तीलालजी ने राज्य में आत्महत्या कर रहे किसानों के लिए मात्र दुःख ही व्यक्त नहीं किया, अपितु उनके परिवार की मानसिक स्थिति, बच्चों के भविष्य एवं शिक्षा के बारे में सोचकर मदद का हाथ आगे बढ़ाया, 1000 बच्चों का पालकत्व स्वीकार कर जिम्मेदारी ली, उनकी यही सोच समाज को मजबूत करने का एक सार्थक प्रयास हैं और मैं इसकी सराहना करता हूँ. वास्तव में यह बहुत बड़ी बात है तथा उनके इस महान कार्य के लिए मैं उनका अभिनंदन करता हूँ".

"मानवीय संवेदना की प्रतिमूर्ति हैं श्री शान्तीलालजी मुथ्था"

- देवेन्द्र फड़नवीस,
मुख्यमंत्री महाराष्ट्र

मुख्यमंत्रीजी ने आगे कहा कि, "हमारी संस्कृति में पूरे विश्व को ही हम अपना परिवार मानते हैं. वसुधैव कुटुम्बकम की अवधारणा है कि यहाँ जो जन्म लेगा उसे बेहतर जीवन मिलना चाहिए. इस ध्येय से प्रेरित होकर आप यह कार्य कर रहे हैं. हमारी भारतीय संस्कृति का पालन कर रहे हैं. किसी को कुछ समस्या आती है तो उसका हल भी समाज से निकलना चाहिए आपकी यह भावना है कि हर व्यक्ति को अच्छा जीवन जीने का अधिकार है, इस बात को ध्यान में रखते हुए आप कार्य कर रहे हैं. शान्तीलालजी जैसे व्यक्ति जब ऐसा महान कार्य करते हैं तब समाजजन भी अपना पूरा सहयोग देते है. शांतिलालजी, इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए मैं आपका व आपकी पूरी टीम का मनपूर्वक अभिनंदन करते हुए आभार व्यक्त करता हूँ".

इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री श्री फड़नवीस ने अपने विचार रखते हुए कहा कि, "जब भी बड़ा संकट या त्रासदी आती है, तब सरकार की ओर से प्रयास किया जाता है, लेकिन समाज का सहयोग मिलने से समस्या का समाधान आसानी मिल सकता है. पिछले कुछ सालों में किसान जिस प्रकार समस्यायों का सामना कर रहे हैं, उनमें निराशा की भावना आ रही है, सरकार उन्हें उससे बाहर निकलने का प्रयास कर रही है. इसी तारतम्य में हमने यवतमाल जिलें में "बलिराजा चेतना अभियान" चलाया है, जिसके सार्थक परिणाम मिल रहे हैं. यह अभियान केवल यहीं तक सीमित रहे इससे हम संतुष्ट नहीं हैं, बल्कि यह अभियान राज्य के हर क्षेत्र में चलाया जाना चाहिए. मेरी यह भावना है कि किसानों की आत्महत्याएं न केवल कम हो, बल्कि पूरी तरह बंद होना चाहिए".

श्री फड़नवीस ने भावना व्यक्त करते हुए कहा कि "मेरी समाज और प्रसार माध्यमों से प्रार्थना है कि आत्महत्या एक संवेदनशील विषय है, इस पर हर एक को दुःख होना स्वाभाविक हैं. आत्महत्या होने पर हर एक की संवेदना जागृत होनी चाहिए. किन्तु इसका प्रचार कर हम कोई अच्छा सन्देश नहीं देते. अगर कोई किसान आत्महत्या करता हैं तो हमें निश्चित रूप से दुःख होना चाहिए, उसके परिवार को मदद करने की भावना मन में आनी चाहिए, हमें इसके लिए काम करना चाहिए". आपने आगे कहा कि "लगातार 3-4 वर्षों से बारिश न हो तो पानी की कमी महसूस होती है, जिसका असर खेती

पर होता हैं. बारिश की अनियमितता की वजह से फसल नियमित रूप से नहीं आती, इसका बुरा असर किसान के परिवार पर होता है, कभी-कभी तो खाना मिलना भी मुश्किल हो जाता है. जो खेती बारिश पर निर्भर हैं उसका संकट आसमानी नहीं सुल्तानी माना जाना चाहिए. शासन के स्तर पर किसानों को अच्छी सिंचाई सुविधा उपलब्ध नहीं होने से किसानों को इन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है". आपने सुझाव देते हुए कहा कि "हम विकेन्द्रित जल संचय स्थल का निर्माण करें तो बारिश न होने की दशा में भी पानी उपलब्ध होने पर किसान अच्छी खेती कर सकता हैं और समाज को अनाज दे सकता है".

मुख्यमंत्री श्री फड़नवीस ने बताया कि "वर्तमान में जलयुक्त शिवार योजना लोक अभियान बन गई हैं, इसके माध्यम से राज्य में विविध जलसंचय के स्थल निर्मित हुए हैं और हम देख सकते हैं कि पूर्व मानसून की बारिश से ही वे सभी जलसंचय स्थल पानी से भर गये हैं, यह निश्चित ही ख़ुशी की बात हैं. ऐसी योजना के महत्व को समझकर समाजजन का सम्पूर्ण सहयोग मिला हैं, जिससे जलयुक्त शिवार योजना एक सामाजिक अभियान बन गई है, परिणामस्वरूप इस प्रकार की समस्यायों का समाधान निकलने लगा है, लेकिन यह तो केवल एक शुरुआत हैं".

जीवन से निराश हो चुकी श्रीमती अनिता देवकुळे के जीवन में आशा की नई किरण लाने और उसकी तीन बेटियों का जीवन संवारने में भारतीय जैन संघटना की भूमिका.

आपने कहा कि "आज का संकट बड़ा तो है लेकिन सामना करना बिलकुल मुश्किल नहीं है. अगर अच्छे लोग सामने आयें तो परिवर्तन होता ही है, ये हम यहाँ पर देख रहे हैं. शान्तीलालजी का यह प्रकल्प केवल दिखावे के लिए नहीं हैं अपितु पूरी एक पीढ़ी का पुर्ननिर्माण हैं". आपने उपस्थित बच्चों को कहा कि "आप सभी विपरीत परिस्थिति में यहाँ आये हैं, अनेक प्रकार की कठिनाईयों को झेलते हुए यहाँ पहुँचने पर मन में निराशा भाव आने की संभावना हैं, लेकिन ये बात हमेशा याद रखों कि सामाजिक आधार के रूप में शान्तीलालजी सदैव आपके साथ हैं, उन्होंने यहां होस्टल व स्कूल में बेहतर व्यवस्थाएं उपलब्ध की हैं, इसका निश्चित रूप से फायदा उठाना चाहिए".

आपने बच्चों को आगे कहा कि "जीवन में उच्च शिक्षा लेने का मन में ध्येय रखो, इतना बड़ा बनने की उम्मीद रखों कि मैं जीवन में कुछ ऐसा कर दिखाऊं कि हमारे सभी किसान परिवारों को हमेशा अच्छी स्थिति प्राप्त हो, उनके मन में आत्महत्या का विचार कभी न आए. आप सभी इस माध्यम से सामाजिक कार्य करने के लिए तैयार हो और शान्तीलालजी जैसे सामाजिक कार्य करने में अपना योगदान दे, इसके लिए आपको शुभकामनाएं देता हूँ".

बीड जिले के माजलगाँव तहसील की श्रीमती अनिता देवकुळे ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री को अपनी तीन बेटियों के जन्म की वजह से झेल रही मानसिक एवं शारीरिक यातना से मुक्ति हेतु, पत्र लिखकर तीनों बेटियों सहित आत्महत्या करने की इजाजत मांगी थी, जिसका समाचार टेलीविजन पर देखकर, भारतीय जैन संघटना के संस्थापक श्री शांतीलालजी मुथ्था ने न केवल श्रीमती अनिता देवकुळे को नौकरी देकर मदद करने की पेशकश की बल्कि उसकी तीनों बेटियों के शैक्षणिक पुनर्वसन की जबावदारी भी ली.

मुख्यमंत्री श्री फड़नवीस ने बीजेएस प्रकल्प में इन तीनों बेटियों को अपने हस्ते शैक्षणिक प्रवेश देते हुए कहा कि "मा. प्रधानमंत्री मोदी जी ने "बेटी बचाओं – बेटी पढ़ाओं" का नारा दिया हैं, जब तक लड़कियों को शिक्षा नहीं मिलती, उनका रूपान्तर मानव संसाधन में नहीं होता तब तक देश में बदलाव संभव नहीं हैं. इसलिए देश के हर कोने में बेटियों को पढ़ाने के लिए लोक अभियान के माध्यम से प्रयास चल रहा है. मैं एक मुख्यमंत्री के रूप में यहा आकर इन बेटियों का शैक्षणिक प्रवेश करता हूँ, तब ये एक महत्वपूर्ण खबर बन जाती हैं और इसका असर जिन पालकों ने अभी तक अपनी बेटियों का स्कूल में दाखिला नहीं लिया हैं वें भी इसके बारे में सोचने लगते हैं, कि अगर सरकार इस बात पर ध्यान दे रही हैं तो हमें भी हमारी बेटियों को शिक्षा दिलानी चाहिए. इन प्रवेशित तीनों बेटियों से मैं आशा करता हूँ कि ये भी बड़ी होकर समाज को एक नई दिशा देने का कार्य करेगीं". आपने विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि "शान्तीलालजी आप एक उत्तम कार्य कर रहे हैं. समाज में जिनके पास सब कुछ हैं उन्हें जिनके पास कुछ नहीं है ऐसे वर्ग पर ध्यान देना चाहिए. जीवन में धन तो सभी कमाते हैं लेकिन जो जरुरतमंदों की मदद की इच्छा मन में रखता है उसका जीवन सही रूप से अर्थपूर्ण हैं. आपके पास सब कुछ होकर भी आप समाज को देना चाहते हैं इसका अर्थ हैं आप मन से श्रीमंत हैं. इस प्रकार के भाव हर एक के मन में आना चाहिए उसके लिए मैं शुभकामनायें देता हूँ. इस हृदयस्पर्शी कार्यक्रम में आमंत्रण के लिए मैं शुक्रगुजार हूँ तथा सभी बच्चों को उनके भावी जीवन के लिए शुभकामनाएं देता हूँ".

With Best Complements From:

KANKARIYA
TEXTILE INDUSTRIES PVT. LTD.

Textile Processing & Printing With Digital Rotary & Automatic Computerised Flatbed Machine

Survey No. 91, Pirana Road, Piplej, Ahmedabad-382 405 (India)
Ph.: +91-079-25734305, Fax: +91-079-25734083
Email: kti@kankariyatex.com
Website: www.kankariyatex.com

To,

RNI No.-MAHBIL/2016/66409
Postal Registration No.-PCE / 089 / 2016-2018
License to Post without prepayment No.-WPP-255/31.12.2018
Published on 7th of Every Month
Posted at Market Yard PSO, Pune On- 10th of Every Month

If undelivered Please Return To

BJS
Bharatiya Jain Sanghatana

Level IV, Muttha Towers, Loop Road,
Near Don Bosco Church, Yerawada, Pune 411006
Tel. : 020 4120 0600, 4128 0011, 4128 0012
Website : www.bjsindia.org E mail : info@bjsindia.org Facebook : www.facebook.com/BJSIndiacommunity Tweeter: BJS_India

मुद्रक तथा प्रकाशक – प्रफुल्ल पारख द्वारा भारतीय जैन संघटना के लिये प्रभात प्रिंटिंग वर्क्स, 427, गुलटेकड़ी, पुणे – 411037 से मुद्रित तथा मुथ्था टावर, लूप रोड, नियर डॉन वास्को चर्च, येरवडा, पुणे – 411006 से प्रकाशित. सम्पादक – प्रफुल्ल पारख, फ़ोन – (020) 41200600